हक़ और बातिल की जंग

सफ़वतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद नक़वी साहब ताबा सराह

हक़ व बातिल में जंग जारी है और यह जंग उस वक़्त तक बाक़ी रहेगी जब तक इमामे आख़िर की तलवार बातिल को जड़ से उखाड़ कर न फेंक दे। इस मुख़ालेफत की शुरुआत शैतान के जनाबे आदम (अ0) को सजदा न करने से हुई। जिसके बाद से कोई ज़माना ऐसा नहीं मिलता जिसमें यह जंग जारी न हो। कभी बातिल के पुजारी क़ाबील ने हाबील को मौत के घाट उतारा। कभी जनाबे यूसुफ (अ0) को भाईयों के हाथों तकलीफें बर्दाश्त करनी पड़ीं। ज़करिया (अ0) पर आरे चले, यहया (अ0) का नाहक़ ख़ून बहा, मूसा (अ0) को शहरों की खाक छानना पड़ी, अय्यूब (अ0) को मुसीबतों का शिकार होना पड़ा, ईसा (अ0) को (ईसाईयों के बक़ौल) सूली दी गई। गरज़ हक़ के हर अलमबरदार को मुसीबतों का शिकार होना पड़ा। हर सुधार करने वाले को शैतानी ताक़तों के पुजारियों से जान बचाना दुश्वार हो गई। मगर जीत आख़िरकार हक़ ही की होती रही। हमेशा बातिल के चाहने वाले हक़ के तरफदारों पर ज़ुल्म करके थक गये। लेकिन हक़ का ही बोलबाला रहा।

क़ाबील, हाबील को क़त्ल करके ख़ुद शर्मिन्दा हुआ। यूसुफ (अ0) के भाई उनके सामने सजदा करते नज़र आये। ज़हर ने सुक़रात को तो मौत की नींद सुला दिया मगर क़ौम के लिए आबे हयात का काम किया। ज़करिया (अ0) का नाम मज़लूमों की फेहरिस्त में ऊपर है और क़ातिलों पर आज भी लानत होती है। यहया (अ0) के नाहक़ ख़ून का जोश उस वक़्त तक न थमा जब तक के बनीइस्राईल की क़ौम से सत्तर हज़ार गले न कट गये, मूसा (अ0) कामियाबी के साहिल से मिल गये और फिरऔन ने अज़ाब की लहरों की गोद में जगह पाई। ईसा (अ0) आसमान पर पहुँच गये। यहूदियों को ज़मीन पर सर छुपाने की जगह नहीं मिलती। ग़रज़ हक़ व बातिल में हमेशा जंग होती रही और ज़ाहिरी शान व ताक़त के बाद भी बातिल ही की हार होती रही। चुनानचे एक ऐसा ही नज़ारा कर्बला के मैदान में सामने आया जिसमें एक तरफ कुछ हक़ के मानने वाले नंगे सर और दूसरी तरफ बातिल के पुजारी हज़ारों की तादाद में सफें बनाए हुए थे। बातिल के पुजारियों ने दुनियावी कुव्वत व ताक़त के बल बूते पर इन्तिहाई ज़ुल्म व सितम तोड़े और हक़ के मानने वाले सब्र करके तमाम मुसीबतें झेल गये। बर्दाश्त न होने वाली मुसीबतें बर्दाश्त करते गये। मगर हक़ के रास्ते से एक इंच न हटे।

कर्बला के वाक़ेए से पहले भी तमाम जंगें हक़ व सच्चाई ही के रास्ते में हुईं, तमाम कुर्बानियाँ उन्हीं के नाम पर चढ़ाई गई थीं।

लेकिन कर्बला के मरने वाले कुछ ऐसा मेयार बना गये जिनके बाद पिछले कारनामे बहुत हलके नज़र आते हैं।

जनाब आदम (अ0) को शैतान के मुक़ाबले में यक़ीनन ज़बरदस्त कामियाबी हुई। मगर ख़ुद उनके क़दम भी सब्रो रिज़ा के रास्ते से डगमगा गये और जन्नत छोड़ना पड़ी।

नूह (अ0) की कश्ती तबाही के समुन्द्र से

बचकर किनारे पर सलामती से पहुँची, मुख़ालिफ़ डूब कर फना हो गये। मगर बाप की मुहब्बत ऐसी छायी कि आख़िर क़ुदरत को झिड़कना पड़ा ''लैसा मिन अह्लिका इन्नहू अमलुन ग़ैरु सालेह'' (वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं है उसके आमाल नेक नहीं थे।)

यूसुफ (अ0) भी तरके औला करने वाले पाये गये। जिस पर नुबुव्वत उनकी नस्ल से भाई की नस्ल में चली गई। मूसा (अ0) ने बहुत तकलीफें बर्दाश्त कीं मगर एक वक़्त उनके दिल पर भी ख़ौफ और दहशत की हुकमरानी थी। जिस पर क़ुदरत की आवाज़ गवाह है। ईसा (अ0) की कुर्बानी यक़ीनन क़द्र की जाने वाली है मगर वह भी एलिया से फरियादी थे। जनाब अय्यूब (अ0) ने बहुत तकलीफें बर्दाश्त कीं लेकिन बीवी के बालों पर नामहरम की नज़र पड़ जाने से उनका भी सब्र का पैमाना भर गया।

इन सबके मुक़ाबले में जब हुसैन इब्ने अली (अ0) के सब्र व इस्तेक़लाल, कुबानी की अज़मत ख़ुदा की मर्ज़ी पर ख़ुश रहने को देखा जाता है तो ज़मीन व आसमान का फर्क़ नज़र आता है कर्बला के मारके के सामने गुज़िश्ता कारनामें कारनामा कहने के लायक़ नहीं है। वह आदम (अ0) थे कि क़दम डगमगा गए और यह हुसैन (अ0) थे कि इंक़िलाबी ज़लज़ले आकर गुज़र गये मगर मज़बूत क़दम न डगमगाए बक़ौल हज़रत शायर इज्तेहादी–

ज़लज़ले आएँ हिले अर्श ख़ुदा मुमकिन है
क़ल्बे शब्बीर (अ0) लरज़ जाए ये नामुमकिन है

मूसा (अ0) फिरऔनियों के ख़ौफ से डर जाएँ, हुसैन (अ0) के तो छः महीने के बच्चे ने भी मौत का मुसकुरा कर स्वागत किया। नूह (अ0) को बेटे की मुहब्बत बेचैन कर दे। मगर हुसैन (अ0) के गुलाम हुर भी बेटे को ख़ाक व ख़ून में लिपटा हुआ देखकर ख़ुश होते हैं। ईसा (अ0) अपनी ज़ाती कुर्बानी पर ख़ुदा से फरियाद करने लगें, मौत को देखकर परेशान हो जाएँ जिस पर इन्जील गवाह हैः

''फिर वह सख़्त परेशानी में फंस कर और भी दिल से दुआ माँगने लगा और उसका पसीना जैसे ख़ून की बड़ी–बड़ी बूँद बनकर ज़मीन पर गिरने लगा।'' (लौक़ा 24/45) बहुत ज़्यादा हैरान परेशान होने लगा। और उसने कहाः मेरी जान बहुत ग़मग़ीन है।

यसूअ् की आख़री दुआः और वह थोड़ा आगे बढ़ा और ज़मीन पर गिरकर दुआ माँगने लगा कि अगर हो सके तो यह घड़ी मुझ से टल जाए और कहा कि ऐ बाप तुझ से सब कुछ हो सकता है इस बला को मुझ से हटा ले। (मरक़स 14/26)

इसके मुक़ाबले में इमाम हुसैन (अ0) हर जगह पर फरमाते जाते थे। जैसे–जैसे शहादत का वक़्त क़रीब होता जाता था मुबारक चेहरे पर ख़ून दौड़ता जाता था। घर भर को लुटाकर भी ख़ुदा के शुक्र के सिवा कोई बात ज़बाने मुबारक से नहीं निकली।

हर उस्ताद का इम्तिहान उसके शार्गिद से लिया जा सकता है अगर इस नज़रिये के मातहत हम हुसैन और ईसा का मुक़ाबला करें तो उधर ख़ुद मसीह अपने बारह हवारियों से कहते नज़र आएँगे।

जब शाम हुई तो वह बारह शार्गिदों के साथ खाना खाने बैठे। और जब वह खा रहे थे तो उनसे कहा मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़ायेगा उस वक़्त यसूअ् ने कहा कि तुम सब मेरे बारे में ठोकरें खाओगे।

चुनानचे यहूदा ने जो उन बारह में से

एक था, उसने आकर खुद को गिरफ्तार कराया। जब यसूअ् गिरफ़्तार हुआ तो सारे शार्गिद छोड़कर उसे भाग गए। (मता बाब 26)

मगर एक नौजवान जो अपने बदन पर बारीक चादर ओढ़े था उसके साथ हो लिया। मगर जब उसे लोगों ने पकड़ा तो वह चादर छोड़ के नंगा भागा। (मरक़स 14/52) अपने पितरस हवारी से कहा कि तू मुर्ग़ के दोबारा अज़ान देने से पहले तीन बार मेरा इन्कार करेगा। (30/14) पितरस लानत करने और क़सम खाने लगा कि मैं यसूअ् को नहीं जानता।

यह ईसा के साथी हैं जिनके बारे में खुद जनाब ईसा (अ0) गवाही दे रहे हैं कि तुम सब ठोकरे खाओगे। उन्हीं में से एक जान के ख़ौफ से लानत पर आमादा हो गया। इन्हीं बारह हवारियों में जो यसूअ् की तमाम उम्र की मेहनत का नतीजा थे एक यहूदा भी निकला जिसने मुख़बरी करके मसीह को गिरफ़्तार कराया और जिसको मसीह के क़त्ल का सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदार क़रार दिया जा सकता है।

मगर हुसैन (अ0) के बहत्तर साथियों में एक भी यहूदा न निकला। हालाँकि इनमें से कुछ ऐसे थे जिनको इमाम की सोहबत से सिर्फ कुछ ही दिन तक फाएदा उठाने का मौक़ा मिला था। और कुछ ऐसे भी थे जिनको इमाम (अ0) की सोहबत में सिर्फ कुछ घण्टे ही हुए थे। (जैसे हुर व वहब कलबी) वह अय्यूब (अ0) थे कि बीवी के बालों पर ग़ैर की नज़र पड़ जाने से बेक़रार हो गये। लेकिन हुसैन इम्तिहान के मैदान में बहनों, बेटियों के सर खुल जाने पर भी राज़ी हो गए। मेरी इज़्ज़त का पर्दा रहे या न रहे मगर उम्मत की पर्दापोशी हो जाए।

इसीलिए हम कर्बला की जंग को हक़ व बातिल की बड़ी जगं और कर्बला के शहीद को सैय्यदुश्शोहदा का लक़ब देते हैं।

और यही वजह थी कि तमाम दूसरी कुर्बानियों और शहादतों के असर महदूद रहे। लेकिन कर्बला की जंग के फाएदे ना महदूद।

यहाँ तक कि हम बारगाहे रिसालत में हाथ फैला कर सवाल कर सकते हैं कि ऐ रसूलुल्लाह (स0) यक़ीनन आपने इस्लाम के फैलाने में बहुत तकलीफें और परेशानियाँ बर्दाश्त कीं। और उनका नतीजा अच्छी तरह सामने आया यानि इस्लाम पूरे ज़ज़ीरए अरब में फैल गया। मगर फिर भी आपकी कोशिशों के नतीजे एक महदूद ज़माने पर ख़त्म हो रहे थे और इधर रसूल (स0) की आँख बन्द हुई, उधर इस्लाम के उसूल व फुरूअ में बदलाव शुरु हो गया। यहाँ तक कि बातिल के अलमबरदार यज़ीद ने इस्लाम की ज़ाहिरी तस्वीर को भी मिटाना चाहा। और वह यक़ीनन अपने इरादे में कामियाब हो जाता अगर आप के जिगर के टुकड़े आपकी गोद के पाले हुसैन इब्ने अली (अ0) ने अपनी ख़ुशी से इस्लाम के पेड़ की सिंचाई न कर दी होती।

मगर इधर तो हुसैन (अ0) ने ख़ंजर के नीचे मुसकुरा कर जान दी और उधर इस्लाम के मुर्दा जिस्म में रूह दौड़ गई।

हुसैन (अ0) ने अपनी और अपने छोटे से लश्कर की कुर्बानी देकर इस्लाम को बचा लिया। अब हुसैन (अ0) के खून से सींचा हुआ इस्लाम ख़त्म नहीं होने वाला है। क़यामत तक कोई ताक़त इसको मिटा नहीं सकती, मिटाने वाले ख़ुद मिट जाएँगे और इस्लाम का बाग़ फलता फूलता रहेगा।

इस्लाम की फितरत में कुदरत ने हुसैन (अ0) के हाथों वह लचक दे दी कि अबः

उतना ही ये उभरेगा जितना कि दबाएँगे

□□□